ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(1): 452-453
www.allresearchjournal.com
Received: 13-11-2020
Accepted: 17-12-2020

डॉ0 चन्द्रदेव ठाकुर
शोधार्थी, ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 चन्द्रदेव ठाकुर
शोधार्थीए ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

श्रीतंत्रनाथझाक रचनाक साहित्यक परिचय

डॉ0 चन्द्रदेव ठाकुर

सारांश
मैथिली–साहित्य क्षेत्रमे दुइ साहित्यकार– श्रीतन्त्रनाथ झा (1909) ओ श्री वैद्यनाथ मिश्र यात्री (1910) क अवतरण होइत अछि, जनिक व्यक्तित्वमे प्रयोगधर्मिता सहजात छल। ई दुनू प्रतिभाशाली साहित्यकार आधुनिक साहित्यक संवृद्धिक हेतु दुइ भिन्न क्षेत्रमे कार्यरत भए गेलाह। श्रीतन्त्रनाथ झा अंग्रेजी साहितयसँ प्रेरणा लए नव–नव शिल्प शैली ओ भाषा छन्दक प्रयोग करैत उच्च कोटिक आधुनिक स्थायी साहित्यक रचना करब। यात्रीजी 1943 ई0 क अपन 'कौशिकीक धार' सँ मुक्तवृतक प्रयोग करैत लोकग्राह्य ग्राम्य भाषा शैली में युग जीवन ओ सामाजक प्रगतिवादी यथार्थ चित्रणक श्री गणेश कएल। ई विशेष ध्यतव्य जे गद्य ओ पद्य–दुहू क्षेत्र में आधुनिक साहितयकें सरिपहूँ बहुत आगा लए गेनिहार अधिकांश साहित्यकारक जन्म एहि शताब्दीक प्रथम दशकमें भेल, जाहिमें प्रयोगधर्मिताक दृष्टिएँ श्रीतन्त्रंनाथ झाक अन्यतम स्थान अछि।

मुख्य शब्द : श्रीतन्त्रनाथ, अछि, अमीत्राक्षर

प्रस्तावना
श्रीतन्त्रनाथ झा प्राचीन छन्दहुक प्रयोग में नवीनता निष्पन्न करबाक संग–संग आधुनिक काव्यधारा में नवीन मोड़ प्रदान कएल अंग्रेजी छन्दक मैथिलीमें सर्वत्रथम प्रयोग द्वारा मुख्यतः अमीत्राक्षर–छन्द (बलैक वर्स) ओ चतुर्दशपदी (सौनेट) का प्रयोग कए हिनक प्रथम उल्लेखनीय रचना थिक' कीचक–वध' जकरॉ साहित्य पत्रक हेतु ओ 1938 ई0 में लिखब आरम्भ कएल। आधुनिक प्रबन्ध काव्यक उच्च कोटिक नवीनतम प्रयोग कयल जे संस्कृति महाकाव्यक सिद्धान्तक विरूद्ध छल। मैथिलि में अमित्राक्षर–छन्दक प्रयोग करबाक हेतु ओ प्राचीन छन्द 'परिवृत' के आधार बनाओल।
1941 ई0 में रचित हिनक 'मुसरीझा' बड़ प्रसिद्ध अछि, जाहिमें हुनक भाषा प्रयोगक दोसर अभिनव स्वरूप सम्मुख अबैत अछि। एहिमे कोनरूपक भाषाक प्रयोग भेल अछि, से उदाहरणार्थ द्रष्टव्य :–

''छँओड़ा रहए परम खुरलुच्ची, परम उकाठी हरहट ढेरि।
बाट–बटोही गौआँ–घरूआ भए अकच्छ पिटलक कए बेरि।।

लोक व्यवहृत उपर्युक्त ग्राम्य–शब्दसमूहक जेहन प्रयोग एतए भेल अछि से देखि अपरिचित व्यक्तिकें सहसा भ्रम भए सकैत छैन्हि जे एकर रचयिता ओ कवि तँ कथमपि नही भए सकैत छथि जे 'कीचक–वध' में प्रांशु–लभ्य फल लुब्ध होअए उद्धहु वामन जनि अथवा 'पुरूषविहीन रूपसी–यौवन कम्र' सन घोर सामासिक संस्कृतनिष्ट शब्द योजना प्रस्तुत कयने छथि। वस्तुतः श्रीतन्त्रनाथ झाक विशिष्टता थिक भाषाई कामरूप प्रदान करब, छन्द बन्धके भावक अनुवर्ती वनाएदेब एवं वस्तु प्रतिपादनमें अत्याधुनिक कला कौशलक उपयोग कवब। हुनक कोनहुँ रचनामें ई विशेषता सहजहिं देखल जाए सकेत अछि।
अपन काव्य प्रयोगक एही प्रवाहमे श्रीतन्त्रनाथ झा 1941 ई0 में अंग्रेजीक प्रसिद्ध छन्द सौनेट क प्रयोग सर्वप्रथम मैथिली साहित्य में कएल अपन 'आश्विनमास' एवं 'नूतन वत्सर' शीर्षक रचनामें। चओदह चरणक ई छन्द अंग्रेजी साहित्य में प्रसिद्ध अछि से अपन विशेष संघटनक हेतु एकर प्रथम आठ चरण में कोनहुँ भाव–विशेषक विवृति होइत अछि ओ अंतिम छओ चरण से ओहि विवृत भाव विशेषक क्रमिक निष्कर्षात्मक निवृति होइत अछि, से सुक्ष्म कलात्मक कौशलक संग।
'आश्विनमास' में दुर्गापूजाक प्रतिमासबहिक सश्रद्धा वर्णन करैत अन्त में कवि कहैत छथि–'पूर्व भक्ति की उपजत हिअहि अथौड़'', जो एहि रचनाम मूल–भावक आवेगात्मक अभिव्यक्ति थिक। अतः मैथिलीमें 'सौनेट' क प्रयोग करैत कवि ओहि छनद के पूर्णतः कलात्मक गरिमा प्रदान कएल तथा ओकरा मैथिलीक हेतु आत्मसात कए लेल।

श्रीतन्त्रनाथझा जखन मैथिलीमें उपहास व्यंग्यमूल्क प्रयोग 1953–56 ई मध्य करए लगलाह तँ मुक्तवृत–शैलीक क अनुशरण कए ओकरा एकटा नवीन व्याप्ति देल। ओ अपने मुक्तवृतमें अन्त्यानुप्रास योजनके सर्वथा वहिष्कृत कए देल तथा ताहिमे गीतात्मक लयक प्रयोग नहि करितहुँ ओकरा गद्यात्मक होएबाक दोषसँ बचओने रहलाह। हिनक एहि प्रकारक रचना–'वर्षाघोध', 'धन छुहा, 'ताक्ष्र्य,' 'भीड़परक पक्षी', 'कौआ ओ कुकूर' मैथिलीमें उपहास व्यंग्य ओ मुक्तवृत दुहूक अभिनव प्रयोगक दृष्टिएँ प्रसिद्ध अछि तथा वर्ण्य–विषय ओ वर्णन–शैलीमे सर्वत्र तादात्म्य–संबंध स्थापित कएने अछि।

अपन उपहासकाव्यये कवि मुक्तवृत्तक अभिनव प्रयोगक संग–संग भाषा ओ अभिव्यक्ति–शैलीक सर्वथा नवीन स्वरूप उपस्थित करेत छथि जे हिनक पूर्ववर्त्ती रचनामें कतहु नहि भेटैत अछि एहि उद्धरणमे 'बिनु मरिचे कर्पूर जकाँ उड़ि जाएव ओ 'आगि पर मोम जकाँ गलि जाएब उपमानक। जे सार्थक प्रयोग भेल अछि से अपरिचित नहि होइतहुँ अर्थगार्भिताक दृष्टि सँ सर्वथा नवीन कहल जाए सकैत आछि। एहिना 'कुकूरमें होमकुण्डसँ सटिकें सूतल कुकूरक जे संदेहालंकार सँ युक्त वर्णन भेल अछि, ताहिमे समेटल कारी कम्मल, हैराएल अलकतरा ओ 'चित्रगुप्तक ओंहराएल मोसियाना' क उपमान देल गेल आछि से सर्वथा नवीन थिक एवं निहित व्यंग्यकें बड़ मर्मिकताक संग व्यंजित करैत अछि। एहिना अपन उपहासकाव्यासवहिमें कवि अनेकानेक लोक ग्राह्म उपमानक प्रयोगकएने छथि जे मैथिलीमें सर्वथा नव कहल जाए सकेत अछि ओ जाहिसँ अदभुत अर्थगर्भित व्यंग्यक समावेश होइत अछि, यथा–'मूसर सन लोल', 'चार सन डेन' लोल वंशी सन', पाटी केर पोतना', 'औन्हल अरगासनक कोहासन' आदि। कवि जाहि विषयक वर्णन करैत छथि तकरा संगो पांग चित्रित कए दैत छथि। 'वर्षाघोष' कविता में कानोकान भरल डबरा में पीअर–पीअर ढाबुसक उल्लासपूर्ण कर्कशनादक व्यंगयपूर्ण वर्णन करबाक पश्चात बेंगके कहैत छथिन्ह

''ठनकासँ वहिर लोकक कानमें
कथीलए कनेको करतैक असरि
कतबओ कए प्रयास करबह तों कर्कशनाद !''

हिनक प्रयाणालाप शीर्षक कविता कविकें चरणोत्कर्ष पर पहुँचाए देलनि, एहिमे भावक तीव्रता सर्वत्र रेखांकित कएल जा सकैत अछि। कवि उपनिद्ध भावक तीव्रता ओ मन्दताकें आरोह ओ अवरोहकें, उत्थान एवं पतनकें तदनुकूल छन्दक प्रयोग कए अत्यन्त रोचक रूपें चित्रित कएने छथि।

प्रयाणालाप' में प्रयुक्त मुक्तवृत हिनक उपहासकावयक मुक्तवृत जकाँ अनतिलयात्मक नहि अछि, प्रत्युत एहिमे एकरा विशेष लयात्मक, विशेष प्रवाहपूर्ण ओ प्रगीतात्मक बनाए प्रस्तुत कएने छथि। एहिं हेतु कवि चरणमें मात्राकें घटाए–बढाए, यथोचित यति–गतिक विषम कलात्मक विन्यास कए तथा गीतात्मक अन्वितिकें स्थापित करैत छन्दक एहन कुशल चित्रण करैत छथि जे उपनिबद्ध भावकें प्रतिध्वनित करैत रहैत अछि।

प्रो0 तंत्रनाथ झाक 'कृष्ण–चरित' बारह सर्गक विविध भावछन्दमय उत्कृष्ट महाकाव्य थिक। एहि मध्य कविक मौलिक प्रतिभाक दर्शन होईत अछि, शिष्य–शिष्यक बीच संबंधकें बड़ शिक्षाप्रद ढंगसँ लिखिलनि अछि। महाविद्यालयसँ अवकाश प्राप्त कयलाक पश्चात् महाकवि श्री तंत्रनाथ झा एहि महाकाव्य रचना कएलनि। 'कृष्ण–चरित में परंपरा ओ कृष्ण–चरित' प्रबंध–काव्यमें कवि कृष्णक जीवन–चरितक व्याजें छात्र जीवनक आदर्शक कएने छथि। एहिमें ने तँ कृष्णक जन्मक चित्रण अछि ने यौवन लीलीक उल्लेखं कुलपति संदीपनि मुनिक आश्रमक आकर्षक चित्र 'कृष्ण–चरित' चरित्र में निहित अछि। आश्रममें सहज जीवन व्यतीत करैत कृष्णक नित्य–लीलीक स्वाभावितक वर्णन एहिमे भेटैट अछि। गुरूकुलमे रहैत कृष्णक संग सुदामाक परस्पर स्नेह ओ सौजन्यक अकृत्रिम विकास सेहो वर्णित अछि।

'कृष्ण चरित'क कथोपकथन सहज ओ संक्षिप्त अछि, जाहिसँ वस्तु–वर्णनमे नाटकीयता एवं कथाक विकासमे गतिशीलता उत्पन्न भए गेल अछि। कृष्ण–सुदामाक वन मध्य वार्त्तालाप, उद्धव ओ बटुकक संवाद, कृष्ण ओ गुरूपत्नीक संवाद आदि 'कृष्ण चरित' क रोचक एवं हृदयस्पर्शी स्थल थिक। अपन उत्कृष्ट–भाषा–शैलीक हेतु सेहो 'कृष्ण चरित' पुनः मैथिली साहित्यमें एकटा नवीन कीर्त्तिमान स्थापित करैत अछि।

संदर्भ

1. शिखरिणी, प्रकाशक–चेतना समिति, विद्यापति–भवन, विद्यापति–मार्ग, पटना–800001, पृष्ट–111,112
2. श्री तंत्रनाथ झा अभिनंदन ग्रन्थ, प्रकाशक– अभिनंदन ग्रन्थ समिति, 61 जी दिवाना तकिया, कटहरबाड़ी, दरभंगा, पू–206
3. तत्रैव, पृ–207
4. तत्रैव, पृ–208
5. तत्रैव, पृ–209
6. तत्रैव, पृ–210
7. तत्रैव, पृ–211
8. तत्रैव, पृ–212